



अखण्ड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेट

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ



श्रद्धये श्री आत्मन्

दिपावली पर्व ज्ञान का पर्व है। किसी भी दो रचनाओं के बीच दूरी कम होने पर अंदर से ज्ञान प्रकट होता है और हम आध्यात्मिक वैज्ञानिक के रूप में यह सिद्ध करते हैं कि दूरी के अभाव में सत्य की अनुभूति होती है। सत्य ज्ञान का ही अस्तित्व है व इसी ज्ञान को शक्ति, शान्ति, आनन्द, अमरता व परब्रह्म कहते हैं। वर्तमान समय आरोही द्वापर युग का 322वाँ वर्ष है। सामान्यतः दिपावली पर्व जिस प्रकार मनाया जाता है वो ठीक है, परन्तु युग के अनुसार दिपावली पर्व का वास्तविक स्वरूप क्रियायोग ध्यान की गहराई प्रकट होता है। क्रियायोग ध्यान में हम शरीर और मन के बीच दूरी कम करते हैं जिससे अंदर एक ज्योति प्रकट होती है। इसी ज्योति को ज्ञान की ज्योति कहते हैं। यह ज्ञान की ज्योति जब सिर और रीढ़ में बुझे हुए ज्ञान के दीप (मूलाधर, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनहत, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्रार) को जगाती है, तो ये सातों ज्ञान के दीप जल उठते हैं। इस अवस्था में अपना स्वरूप प्रकाशमय हो जाता है और हम सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चल पड़ते हैं।



मानव जीवन का लक्ष्य सत्य व अहिंसा की अनुभूति करना है। इस अनुभूति में समय व दूरी का अभाव होता है, यही योग की अवस्था है। क्रियायोग के अभ्यास से एक ही जन्म में योग की अवस्था प्राप्त हो जाती है। योग की अवस्था में स्वरूप में चौदह भुवन का दर्शन होता है, जिसकी उत्पत्ति धन (निराकार सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी चौतन्य अस्तित्व) से है। तेरहवें भुवन के धन को धनतेरस कहते हैं, इसे अनन्त धैर्य व आत्म प्रेम संतृप्त विनम्रता कहते हैं, और इसे छठें स्वर्ग की अलौकिक शक्ति कहते हैं। यह अनुभव होने के पश्चात ही हम चौदहवें भुवन (सत्य लोक – सातवां स्वर्ग) में हम प्रवेश कर सकते हैं। सत्य लोक में प्रवेश करने पर हम कैवल्य अवस्था प्राप्त करते हैं, यही मानव जीवन का लक्ष्य है।

DIWALI IS FESTIVAL OF AWAKENING OF THE KNOWLEDGE (LIGHT) HIDDEN WITHIN

It has been proved that the source of knowledge is the process of union - how to reduce distance between two. Let us think how to reduce distance between two. We select that which is nearest of near – body and mind. To reduce distance between body and mind, we place mind on body. In the process, power is generated known as yoga agni. That power (yoga agni) starts awakening of the lamps which are silent and in dormant state within the spiritual channel in the brain and spinal cord. The places of those lamps are known as seven churches and the lamps are known as the chakras – mooladhar, swadhisthan, manipur, anahat, vishuddhi, agya and sahasraar.

The moment we reduce distance between body and mind and distance becomes zero, we realize perfect knowledge. All dormant knowledge within brain and spinal cord gets awakened. Then, we experience only one thing – Eko ahem bahushyami – God Alone Exists. Realization of this Truth is called perfection of Diwali festival. However, the way people celebrate today as Diwali festival is also correct. In future, Diwali festival will be celebrated as has been explained above. As the present time is ascending Dwapara Yuga, the celebration of Diwali festival has to be re-arranged.



